आकाश

क्षिति, जल, पावक, गगन समीरा। पंच जनित यह अधम शरीरा।

इसमें गगन (आकाश) को छोड़कर हम चारों पर लेख लिख चुके हैं तो सोचा कि आकाश पर भी अपने विचार लिखें। तो शरीर तो अपने आप ही इस लेखों में निहित हो ही जायेगा और इस पंचों की उपयोगिता तो सिद्ध होगी ही। शरीर को इनसे क्यामिला है और कैसे, इन अवयवों से शरीर और पुष्ट होता रहेगा।

कुछ लोग गगन को अवयव भी मानते, कुछ लोग इसे अवयव नहीं भी मानते हैं। इस बात का निर्णय करना बहुत ही कठिन काम है। हर वस्तु इस भूतल पर या अन्तरिक्ष में स्थित है। आकाश में शून्य और शून्य में वस्तुओं का अस्तित्व है। यह आकाश क्या है, कहाँ है, कहाँ नहीं है? हर चीज के अन्दर है, बाहर है, ऊपर है, नीचे है। आकाश क्या है, यह कहना कठिन है और कैसा होता है, यह कहना भी कठिन है। पानी (जल) जिस प्रकार उसी चीज का आकार ले लेता हे, जिस भी पात्र में रखा जाता है, उसी तरह आकाश हर चीज को ढके हुए, हर चीज के अन्दर भी है। जैसे भौतिक शास्त्र हमें बताता है कि अणु से छोटा परमाणु होता है, उसके अन्दर भी इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन और छोटे-छोटे कण होते हैं और इलेक्ट्रॉन प्रोटोन के चारों ओर घूमते रहते हैं। बिना आकाश के यह भी सम्भव नहीं है वरना यह इलेक्ट्रॉन आपस में टकरा जायेंगे। इसी तरह वायुमण्डल में हवा होती है पर सूर्य के गृह आपस में कभी नहीं टकराते हैं सूर्य के चारों ओर अपनी-अपनी सीमा में घूमते हैं। ग्रहों के बीच भी आकाश होता है। कुछ लोग इसको ईथर भी कहते हैं पर यह क्या है कोई नहीं कह सकता है।

भारत के पूर्वजों ने शून्य की गणना की थी और यह भी कहा था सब चीजें शून्य से निकली हैं और शून्य में समा जायेंगी। शून्य का ही उल्टा आकाश है, असीमित है। जैसे शब्द भी जभी होगा जब शान्ति होगी। निःशब्दत (Silence) इसीलिये कहा जाता है कि हर वस्तु में आकाश का अवयव पाया जाता है। हमारे शरीर में करीब 90% पानी है, विभिन्न चीजों में। उसी तरह से आकाश या शून्य भी जरूरी तभी तो हर चीज के बीच गति या अवयवों का इधर-उधर जाना सम्भव है। हर चीज के भीतर आकाश अधिक है और तरंगों की वजह से ही वह चीज हमें जिस रूप में उसका नाम दिया जाता है, वह होती है।

आकाश को किसी भी परिभाषा में व्यक्त नहीं किया जा सकता है क्योंकि परिभाषा में बँधते ही वह आकाश नहीं रह सकता है। एक काले कमरे में बन्द हो आकाश तो वह कमरा उसे भरा हुआ माना जायेगा, जो हवा हो सकती है, पर फिर वह आकाश नहीं रहेगा। इस लेख का उद्देश्य हवा के बारे में बात करना नहीं है।

जैसे ही हमारा मस्तिष्क यह प्रश्न उठाता है कि आकाश क्या? वह यह धारणा को स्थापित करना चाहता है, जो कुछ है नहीं यदि यह बता दिया जाये कि वह यह है, ऐसा रंग है, ऐसा रूप है, ऐसा गुण है। आकाश कोई चीज नहीं, तभी तो कहा जा सकता है कि कोई चीज नहीं है। किसी चीज का विलोम ही कोई चीज नहीं है। शून्य के बारे में आप लिख सकते हैं जितना चाहे पर वह शून्य के इर्द-गिर्द होगा, शून्य नहीं होगा। इसी तरह आकाश भी है, उसके बारे में हम कह सकते हैं पर परिकल्पना नहीं कर सकते क्योंकि हम उसके बारे में जानते ही नहीं हैं।

आकाश तत्व हमारी संरचना में बहुत ही आवश्यक बात है। इसी लिए हमारा स्वास्थ्य भी इस पर बहुत आधारित है। आकाश तत्व हमारे शरीर में नहीं होगा तो हमारे शरीर की कार्यप्रणाली ठीक से काम नहीं करेगी। इसलिए आकाश तत्व को ध्यान में रखते हुए हम हर समय खाना-पीना नहीं कर सकते हैं। आकाश उसी तरह वायुमण्डल को भी साफ रखने के लिए जरूरी है। आकाश को व्योम भी कहते हैं जो Vaccum का भी पर्यायवाची है। उससे हम सफाई भी करें तो वह गन्दगी को इकट्ठा करेगी, फैलायेगी नहीं। जैसा हमारे प्रचलित तरीकों में होता है। हम दूसरों को उनके कार्यक्षेत्र में हस्तक्षेप न करें ताकि वह अपने मन के अनुसार काम कर सकें।

—रश्मि उमेश रोहतगी
24161 नीलन ड्राईव नौवी(मि०) सं०रा०अ० 48374-3754
248-471-5786 e-mail : rurohatgi@yahoo.com
website : www.rurohatgi.com